|| श्री स्वामी सामर्थ ||

||श्री बगलामुखी चालीसा ||

|श्री गणेशाय नमः|

श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

॥ दोहा ॥

सिर नवाइ बगलामुखी । लिखूं चालीसा आज ॥
कृपा करहु मोपर सदा । पूरन हो मम काज ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जय श्री बगला माता । आदिशक्ति सब जग की त्राता ॥
बगला सम तब आनन माता । एहि ते भयउ नाम विख्याता ॥

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी । असतुति करहिं देव नर-नारी ॥
पीतवसन तन पर तव राजै । हाथहिं मुद्गर गदा विराजै ॥ ४ ॥

तीन नयन गल चम्पक माला । अमित तेज प्रकटत है भाला ॥
रत्न-जटित सिंहासन सोहै । शोभा निरखि सकल जन मोहै ॥

आसन पीतवर्ण महारानी । भक्तन की तुम हो वरदानी ॥
पीताभूषण पीतहिं चन्दन । सुर नर नाग करत सब वन्दन ॥ ८ ॥

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै । वेद पुराण संत अस भाखै ॥

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा । जाके किये होत दुख-नाशा ॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै । पीतवसन देवी पहिरावै ॥
कुंकुम अक्षत मोदक बेसन । अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ॥ १२ ॥

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना । सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना ॥
धूप दीप कर्पूर की बाती । प्रेम-सहित तब करै आरती ॥

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे । पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ॥
मातु भगति तब सब सुख खानी । करहुं कृपा मोपर जनजानी ॥ १६ ॥

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु । तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ॥
बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं । अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ॥

पूजनांत में हवन करावै । सा नर मनवांछित फल पावै ॥
सर्षप होम करै जो कोई । ताके वश सचराचर होई ॥ २० ॥

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै । भक्ति प्रेम से
दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई । निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई ॥

फूल अशोक हवन जो करई । ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई ॥
फल सेमर का होम करीजै । निश्चय वाको रिपु सब छीजै ॥ २४ ॥

गुग्गुल घृत होमै जो कोई । तेहि के वश में राजा होई ॥
गुग्गुल तिल संग होम करावै । ताको सकल बंध कट जावै ॥

बीजाक्षर का पाठ जो करहीं । बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥
एक मास निशि जो कर जापा । तेहि कर मिटत सकल संतापा ॥ २८ ॥

घर की शुद्ध भूमि जहं होई । साध्का जाप करै तहं सोई ॥
सेइ इच्छित फल निश्चय पावै । यामै नहिं कदु संशय लावै ॥

अथवा तीर नदी के जाई । साधक जाप करै मन लाई ॥
दस सहस्र जप करै जो कोई । सक काज तेहि कर सिधि होई ॥ ३२ ॥

जाप करै जो लक्षहिं बारा । ताकर होय सुयशविस्तारा ॥
जो तव नाम जपै मन लाई । अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई ॥

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा । वाको पूरन हो सब कामा ॥
नव दिन जाप करे जो कोई । व्याधि रहित ताकर तन होई ॥ ३६ ॥

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी । पावै पुत्रादिक फल चारी ॥
प्रातः सायं अरु मध्याना । धरे ध्यान होवैकल्याना ॥

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी । नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥
पाठ करै जो नित्या चालीसा । तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥
सन्तशरण को तनय हूं । कुलपति मिश्र सुनाम ।
हरिद्वार मण्डल बसूं । धाम हरिपुर ग्राम ॥
उन्नीस सौ पिचानबे सन् की । श्रावण शुक्ला मास ।
चालीसा रचना कियौ । तव चरणन को दास ॥

इति श्री बगलामुखी चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥

॥ श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु॥